<u>दिनांक 9/5/2023 को असम भाषाई अल्पसंख्यक विकास बोर्ड द्वारा आयोजित रवीन्द्रनाथ टैगोर की 162वीं जयंती के अवसर पर माननीय राज्यपाल श्री गुलाब चंद कटारिया जी अभिभाषण</u>

असम सरकार के भाषाई अल्पसंख्यक विकास बोर्ड के अध्यक्ष श्री शिलादित्य देव जी,

कार्यक्रम के मुख्य समन्वयक डॉ सौमेन भारतीय जी,

अन्य पदाधिकारी गण, कार्यकर्ता गण,

विभिन्न स्थानों से आए मेरे प्यारे विद्यार्थियों,

मीडिया के मेरे मित्रों,

एवं उपस्थित देवियों और सज्जनों,

पोन-प्रथमे मोइ, रवीन्द्र जयंती उपलक्ष्ये, आपोना लोकक, आन्तरिक अभिनंदन ज्ञापन करिलो।

मित्रों,

आज गुरुदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर की 162वीं जयंती के इस महत्वपूर्ण कार्यक्रम में शामिल होकर मुझे अत्यंत प्रसन्नता का अनुभव हो रहा है। सबसे पहले इस पावन अवसर पर मैं गुरुदेव को कोटि-कोटि नमन एवं वंदन करता हूँ।

रवीन्द्र जयंती समारोह के आयोजन के लिए मैं असम भाषाई अल्पसंख्यक विकास बोर्ड की सराहना करता हूँ और बोर्ड के पदाधिकारियों एवं कार्यकर्ताओं को साधुवाद देता हूं, क्योंकि उनके प्रयास से ही इस सुन्दर कार्यक्रम का आयोजन हुआ है।

मुझे बताया गया है कि असम भाषाई अल्पसंख्यक विकास बोर्ड द्वारा असम के 16 जिलों के 1,000 से भी अधिक प्रतिभागियों के बीच रवीन्द्र संगीत एवं नृत्य प्रतियोगिता का आयोजन किया गया था, जो एक अच्छी पहल है। मैं इस मौके पर यहां उपस्थित प्रतियोगिता के विजेताओं और प्रतिभागियों को हार्दिक अभिनन्दन एवं शुभकामनाएँ देता हूँ।

गुरुदेव मानवता के पुजारी थे। उन्होंने अपनी सभी कृतियों में मानवता का यशोगान किया है। **गीतांजलि** उनका विश्वप्रसिद्ध कविता संग्रह है जिस पर उन्हें साहित्य का नोबेल पुरस्कार मिला था। गुरुदेव नोबेल पुरस्कार पाने वाले प्रथम भारतीय व्यक्ति थे। वे देश के गौरव थे, हमारे आदर्श पुरुष थे।

भारतीय संस्कृति के महान विभूति गुरुदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर का धर्म, दर्शन, अध्यात्म, साहित्य, कला और संस्कृति के प्रति अपना अलग दृष्टिकोण था, अलग सोच थी।

वे उच्च कोटि के कवि थे। उन्होंने अपनी कविता को शांति और सद्भाव का माध्यम बनाया। जहां भी संघर्ष और अशांति का उन्हें भान होता, वहां उनकी कविताएं एक नई आशा और उम्मीद की किरण के रूप में लोगों को प्रेरणा देती हैं।

ऐसा नहीं है कि गुरुदेव केवल भारतीय लोगों के लिए ही उम्मीद थे, बल्कि उन्होंने पूरे विश्व को आशा और मानवता का संदेश दिया। वास्तव में, वे विश्व मैत्री के ध्वजवाहक थे। वे राष्ट्रों के बीच सद्भावना के दूत थे।

मित्रों,

रवींद्रनाथ टैगोर का जन्म ऐसे समय में हुआ, जिस समय भारत की आर्थिक, राजनीतिक और सामाजिक स्थिति दयनीय थी, जो हमारे समाज के ताने-बाने के लिए खतरा प्रतीत होती थी। अपने प्रगतिशील लेखन के माध्यम से, रवींद्रनाथ ने एकता के संदेश को जन-जन तक पहुँचाने का अभूतपूर्व काम किया।

टैगोर ने पश्चिम बंगाल में कोलकाता से लगभग 180 कि॰मी॰ उत्तर की ओर बीरभूम जिले के अंतर्गत बोलपुर के समीप "शांति निकेतन" नाम की एक शैक्षिक और सांस्कृतिक संस्था की स्थापना की। यह अपनी तरह का अनूठा संस्थान माना जाता है। 1901 में स्थापित वह संस्थान आज 'विश्व भारती विश्वविद्यालय' के रूप में देश-दुनिया को ज्ञान के आलोक से आलोकित कर रहा है।

मित्रों,

आज, एक सौ बासठ साल बाद, रवींद्रनाथ टैगोर अभी भी हमारे प्रेरणास्रोत बने हुए हैं। उनका संगीत लोगों को सबसे अधिक भाया है। जिस तरह उनकी कृतियों को आलोचकों और साहित्य के पारखी लोगों द्वारा सराहा जाता है, उसी तरह उनका संगीत भी नई पीढ़ी द्वारा अपनाई जाती रही है। दरअसल, रवींद्रनाथ टैगोर के संगीत में सीमाओं को पार करने की ताकत है। आज, दुनिया भर में हम विभिन्न देशों और महाद्वीपों में रवींद्रनाथ टैगोर के पदचिन्हों को देख सकते हैं।

गुरुदेव के व्यक्तित्व का एक अन्य पहलू प्रकृति के प्रति उनका प्रेम था। उन्होंने महसूस किया कि प्रकृति में सभ्यता की आत्मा निहित है। इस संदर्भ में, मैं उल्लेख करना चाहता हूँ कि जब वे बीमारी से उबरने के लिए हंगरी में थे, तब उन्होंने 8 नवंबर, 1926 को एक पेड़ लगाया था। ऐसा वही कर सकता है जिसके हृदय में मानव जाति और प्रकृति के प्रति असीम प्रेम हो।

गुरुजी ने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में भी अतुलनीय योगदान दिया था। उनकी रचनाएँ हमारे बीच राष्ट्रवाद की भावना को जगाने और अंग्रेजों के खिलाफ लड़ने के हमारे संकल्प को याद दिलाती हैं। उन्होंने 1919 में जलियांवाला हत्याकांड के विरोध में अंग्रेजों द्वारा दी गई **नाइटहुड** की पदवी भी त्याग दी थी। यह उनके मां भारती के प्रति अकूत प्रेम का प्रतीक था।

आज के इस अवसर पर, हमारा यह कर्तव्य बनता है कि हम गुरुदेव की विरासत को आने वाली पीढ़ियों के लिए संजोकर रखें - यही हमारी उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

आप सभी को पुन: बहुत-बहुत धन्यवाद।

जय हिन्द।